



International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476

IJHS 2017; 3(2): 97-99

© 2017 IJHS

www.homesciencejournal.com

Received: 16-03-2017

Accepted: 17-04-2017

डॉ. छाया हार्डिया

विभागाध्यक्ष, गृहविज्ञान विभाग
(पारिवारिक संसाधन प्रबंध) श्री रेवा
गुर्जर बाल निकेतन महाविद्यालय,
सनावद, जिला- खरगोन (म.प्र.)
भारत

डॉ. जयश्री बाथम

सहायक प्राध्यापक, गृहविज्ञान
विभाग (मानव विकास) श्री रेवा
गुर्जर बाल निकेतन महाविद्यालय,
सनावद, जिला- खरगोन (म.प्र.)
भारत

इंदौर शहर की कामकाजी महिलाओं में व्यावसायिक तनाव एवं चिंता का अध्ययन, उनके व्यवसायिक स्तर, परिवार के प्रकार एवं शैक्षणिक स्तर के संदर्भ में

डॉ. छाया हार्डिया डॉ. जयश्री बाथम

सारांश

व्यवसायिक तनाव व चिंता महिलाओं में आज एक विशेष समस्या बनकर उभर रही है। राष्ट्रीय सर्वेक्षण के अनुसार महिलाओं में पुरुषों कि तुलना में उच्च व्यवसायिक तनाव व चिंता का स्तर पाया गया है। 60 प्रतिशत बिमारियों का कारण नौकरी से संबंधित तनाव व चिंता है। अतः यदि कामकाजी महिलाओं को उनके व्यवसायिक तनाव एवं चिंता का ज्ञान हो तो कुछ हद तक उन्हें इससे उत्पन्न प्रभावों से बचाया जा सकता है। अतः प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य कामकाजी महिलाओं में व्यावसायिक तनाव व चिंता को उत्पन्न करने वाले कारकों पर प्रकाश डालना है। जिससे वह अपने तनाव व चिंता को कम कर या दूर कर स्वास्थ्यप्रद वातावरण में अपनी कार्यक्षमता को बढ़ाकर कार्य कर सकने में सक्षम हो सकती हैं। अतः प्रस्तुत शोध प्रबंध "इंदौर शहर की कामकाजी महिलाओं में व्यावसायिक तनाव एवं चिंता का अध्ययन, उनके व्यावसायिक स्तर, परिवार के प्रकार एवं शैक्षणिक स्तर के संदर्भ में" को करने हेतु इन्दौर शहर के विभिन्न संस्थानों में कार्यरत 300 महिलाओं का चयन उद्देश्य परक विधि द्वारा किया गया। प्रदत्तों का संकलन डॉ. ए. के. श्रीवास्तव एवं ए. पी. सिंह (1981) द्वारा निर्मित "व्यावसायिक तनाव मापनी" और डॉ. ए. के. श्रीवास्तव एवं एम. एम. सिन्हा द्वारा निर्मित "कार्य चिंता मापनी" द्वारा किया गया। जिसके निम्न परिणाम 0.05 सार्थकता पर प्राप्त हुए - निजी संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव, शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक होता है। निजी संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में कार्य चिंता, शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में कार्य चिंता की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक होती है।

कूट शब्द: कामकाजी महिलाओं, व्यावसायिक तनाव, चिंता, शैक्षणिक

प्रस्तावना

आज की दुनिया कुल मिलाकर अपेक्षाकृत तेजी से बदलती हुई दुनिया है। यह बदलाव कई दिशाओं में आ रहा है। सामाजिक दृष्टि से देखे तो स्वतंत्रता के बाद से होने वाले सबसे अधिक उल्लेखनीय परिवर्तनों में से एक नारी समाज की उपेक्षित बंद घरों की चार दीवारों से निकलकर उसका बाहरी दुनिया की हलचल में शामिल होना है। लगभग आजादी के 64 वर्षों में जो मोटे सामाजिक परिवर्तन हुए हैं, अन्य वर्गों पर उनका प्रभाव कतिपय महिलाओं की प्रगति से कम ही है। स्वतंत्रता के बाद हुए सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में महिलाओं की शिक्षा और रोजगार के अवसरों में काफी वृद्धि हुई। नये हालातों के फलस्वरूप इनके लिए अपनी समानता की अभिव्यक्ति और उनकी प्रतिष्ठा के लिए रास्ते खुल गये हैं। जैसे-जैसे महिलाएं घरों से निकलकर कार्यस्थल तक पहुंच रही हैं। वैसे-वैसे उनकी दिक्कतें भी बढ़ रही हैं। भारत सहित विश्व के अधिकतर देशों में घर व कार्यालय के बीच विभाजित कामकाजी महिलाओं की स्थिति पर शोध हो रहे हैं। भारत के संदर्भ में देखे तो कामकाजी महिलाओं के प्रति समाज के नजरिए में रेखांकित करने योग्य बदलाव आया है।

लिल्हारे डॉ. रेखा एवं बोरकर डॉ. सुनीता (2009), ने लिपिकीय और परिवर्तनशील कार्य अवधि में कार्यरत महिलाओं के कार्य निष्पादन के मध्य तनाव एवं चिंता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य लिपिकीय और परिवर्तनशील कार्य अवधि में कार्यरत महिलाओं के कार्य निष्पादन के मध्य तनाव एवं चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना था। न्यादर्श के रूप में 200 कार्यरत महिलाओं का चयन किया गया था, जिनमें 100 लिपिकीय वर्ग की महिलाएं व 100 परिवर्तनशील कार्य अवधि में कार्यरत महिलाएं थी। प्रदत्त संकलन हेतु तनाव मापनी व चिंता मापनी का उपयोग किया गया था। षोध का निष्कर्ष था कि लिपिकीय और परिवर्तनीय कार्य अवधि में कार्यरत महिलाओं के कार्य निष्पादन

Correspondence

डॉ. छाया हार्डिया

विभागाध्यक्ष, गृहविज्ञान विभाग
(पारिवारिक संसाधन प्रबंध) श्री रेवा
गुर्जर बाल निकेतन महाविद्यालय,
सनावद, जिला- खरगोन (म.प्र.)
भारत

में तनाव एवं चिंता के माध्यों में सार्थक अंतर पाया गया। अली एस. निलोफर व अन्य (2010), ने कराची पाकिस्तान के सामुदायिक कार्यकर्ताओं द्वारा 0 से 30 माह के बच्चों की माताओं में चिंता और अवसाद पर परामर्श कि प्रभावशीलता पर प्रयोगात्मक अध्ययन किया। प्रदत्त संकलन हेतु आगा खान विश्वविद्यालय चिंता और अवसाद मापनी का उपयोग किया गया था। कुल 420 महिलाओं में से 102 महिलाओं की पहचान की गयी जिनमें अवसाद व चिंता के लक्षण थे व इन महिलाओं के 1,2,6,12,18,24 और 30 माह के जीवित जन्म थे। परन्तु 102 महिलाओं में से 62 महिलाओं ने ही आठ सप्ताह के परामर्श हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान की। 62 महिलाओं को आगा खान विश्वविद्यालय चिंता व तनाव मापनी प्रदान की गई। अध्ययन के परिणाम से स्पष्ट होता है कि जिन महिलाओं ने परामर्श प्राप्त किया व जिन महिलाओं ने परामर्श प्राप्त नहीं किया उनके चिंता व तनाव के अंकों में सार्थक अन्तर पाया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव व चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों के परिवार के प्रकार पर तनाव एवं चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

उपकरण तथा प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन से संबंधित बहुत से उपकरण उपलब्ध है। परन्तु प्रस्तुत अध्ययन “इंदौर शहर की कामकाजी महिलाओं में व्यावसायिक तनाव एवं चिंता का अध्ययन, उनके व्यावसायिक स्तर, परिवार के प्रकार एवं शैक्षणिक स्तर के संदर्भ में” अध्ययन को करने के लिए प्रो. डॉ. ए. के. श्रीवास्तव और प्रो. डॉ. ए. पी. सिंह (1981) द्वारा निर्मित “व्यावसायिक तनाव मापनी” (Occupational Stress Index) अथवा प्रो. डॉ. ए. के. श्रीवास्तव और डॉ. एम. एम. सिन्हा द्वारा निर्मित “कार्य चिन्ता मापनी” (Job Anxiety Scale) का उपयोग किया गया।

प्रस्तुत शोध इंदौर शहर के निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत 300 महिला कर्मचारियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। जिनमें निजी संस्था में कार्यरत 150 महिला कर्मचारी एवं शासकीय संस्थान में कार्यरत 150 महिला कर्मचारी न्यादर्श के रूप में चुने गये। न्यादर्श में चुनी गई निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारी संयुक्त एवं एकांकी परिवार की महिलाएं थी। जिनमें 75 संयुक्त परिवार एवं 75 एकांकी परिवार की कार्यरत महिलाओं का चयन किया गया अथवा जिनका शैक्षणिक स्तर निम्न था—हायर सेकेण्डरी, स्नातक स्तर अथवा स्नात्कोत्तर एवं प्रोफेशनल स्तर। जिनमें हायर सेकेण्डरी जिनकी संख्या 25, स्नातक स्तर जिनकी संख्या 25, स्नात्कोत्तर एवं प्रोफेशनल जिनकी संख्या 25 के रूप में न्यादर्श का चुनाव किया गया।

परिकल्पनाएं

1. निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव एवं चिंता के माध्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों के परिवार के प्रकार पर व्यावसायिक तनाव एवं चिंता के माध्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

परिणाम तथा विवेचना

1. निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव के माध्यों की तुलना करना।

प्रस्तुत शोध का पहला उद्देश्य निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव के माध्यों की तुलना करना था। व्यावसायिक तनाव को मापने हेतु इन्दौर शहर

के निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत 300 महिला कर्मचारियों को डॉ. ए. के. श्रीवास्तव और डॉ. ए. पी. सिंह द्वारा निर्मित “व्यावसायिक तनाव मापनी” (occupational stress index) को प्रदान किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण ज.जमेज द्वारा किया गया। इसके परिणाम तालिका क्रमांक 1 में दिये गये हैं –

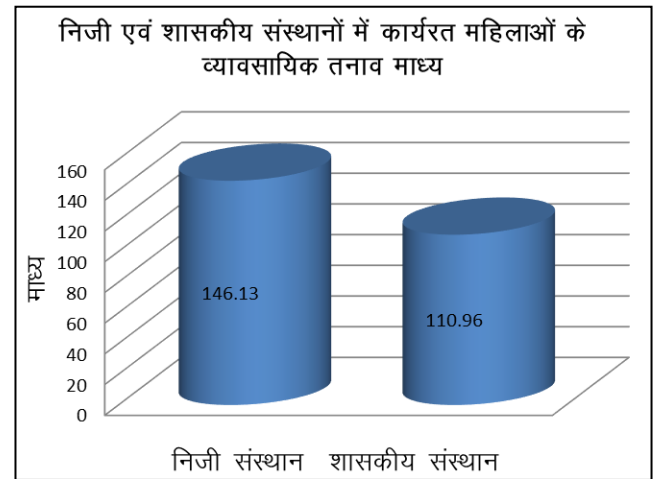
तालिका क्रमांक 1: निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव के माध्य, मानक विचलन, स्वतंत्रता का अंश और टी मूल्य

संस्थान	N	M	S.D.	Df	t-value
निजी	150	146.13	26.31	298	11.48*
शासकीय	150	110.96	26.72		

t-value = 11.48

t-value*0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट है की टी का मान 11.48 है जो की 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है जबकि df = 298 हैं। अर्थात् निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों के माध्य, व्यावसायिक तनाव प्राप्तांकों से भिन्न है। अतः शून्य परिकल्पना (H₀) “निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव के माध्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा”, निरस्त की जाती है। निजी संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव माध्य प्राप्तांक 146.13 है जो की शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव माध्य प्राप्तांक 110.96 से सार्थक रूप से उच्च है।



आलेख क्र. 01

इस प्रकार स्पष्ट है की निजी संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव, शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक होता है।

2. निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में कार्य चिंता के माध्यों की तुलना करना।

प्रस्तुत शोध का दूसरा उद्देश्य निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में कार्य चिंता के माध्यों की तुलना करना था। कार्य चिंता को मापने हेतु इन्दौर शहर के निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत 300 महिला कर्मचारियों को डॉ. ए. के. श्रीवास्तव और डॉ. एम. एम. सिन्हा द्वारा निर्मित “कार्य चिंता मापनी” (job anxiety scale) को प्रदान किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण ज.जमेज द्वारा किया गया। इसके परिणाम तालिका क्रमांक 2 में दिये गये हैं –

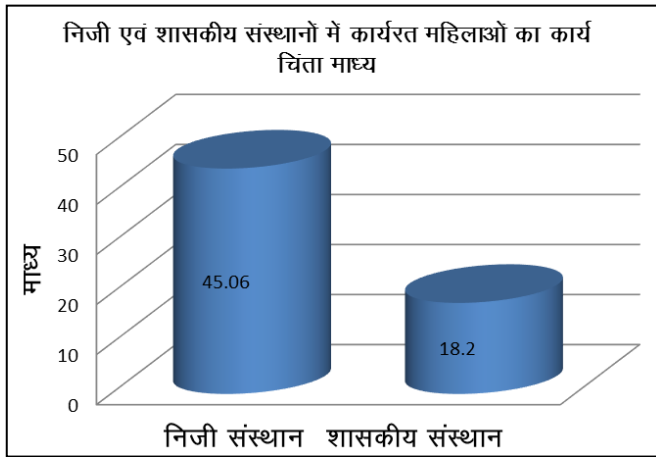
तालिका क्रमांक 2: निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में कार्य चिंता के माध्य, मानक विचलन, स्वतंत्रता का अंश और टी मूल्य

संस्थान	N	M	S.D.	Df	t-value
निजी	150	45.06	25.06	298	11.30*
शासकीय	150	18.20	14.79		

t-value = 11.30*

t-value*0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है की टी का मान 11.30 है जो की 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जबकी df = 298 हैं। अर्थात् निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों के माध्य, कार्य चिंता प्राप्तांकों से भिन्न है। अतः शून्य परिकल्पना (H_0) “निजी एवं शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में कार्य चिंता के माध्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा” निरस्त की जाती है। निजी संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में कार्य चिंता माध्य प्राप्तांक 45.06 है जो की शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में कार्य चिंता माध्य प्राप्तांक 18.20 से सार्थक रूप से उच्च है।



आरेख क्र. 02

इस प्रकार स्पष्ट है की निजी संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में कार्य चिंता, शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में कार्य चिंता की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक होती हैं।

निष्कर्ष

1. निजी संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यवसायिक तनाव, शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यवसायिक तनाव की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक होता है।
2. निजी संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में कार्य चिंता, शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में कार्य चिंता की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Dr. Lilhare, Rekha, Dr. Borka, rSunita A Comparative Study of stress and Anxiety in working women performing clerical and shift hour duties.” International Referred Research Journal. 2009; 3(30).
2. Asad, Nargis, Khan Saiqa. Relationship between job-stress and burnout: original support and creativity as predictor variables.”Instituteof Clinical Psychology University of Karachi, Pakistan and Aga Khan University Hospital Karachi, Pakistan. Pakistan Journal of

Psychological Research, National Institute of Psychology, Quaid-Azam University, Islamabad Pakistan. 2010.

3. अरुण कुमार सिंह, ‘आधुनिक असामान्य’ मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी.
4. अरुण कुमार सिंह, ‘मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां’ 2006, पेज न. 4–5 और 528–529.
5. www.icfaipress.org